डॉ. रणधीर सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिंदी–विभाग,
दयाल सिंह पी.जी. कॉलेज, करनाल।
मो. 91-8295366333, 9416188620
ई–मेल : drrandhirsingh7@gmail.com

डॉ. रणधीर सिंह कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध दयाल सिंह कॉलेज करनाल, हरियाणा (भारत) के स्नातकोत्तर हिन्दी–विभाग में अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से भारतीय साहित्य के भक्तिकालीन साहित्य में 'संत गरीबदास की वाणी में दर्शन और रहस्यवाद' विषय पर 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी' की उपाधि प्राप्त की। मानव–मूल्य, धर्म, संस्कृति तथा संत–साहित्य पर दो पुस्तकें प्रकाशित और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में इन विषयों पर लगभग 40 शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण। 8 छात्रों का पीएच.डी. और 25 छात्रों का एम. फिल्. के लिए निर्देशन–इनके अध्यापन, लेखन और शोध जीवन के आयाम हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्र–पत्रिकाओं में 30 शोध–पत्र प्रकाशित – जिनमें हिन्दी भाषा एवम् भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवम् संवर्द्धन पर बल देते हुए हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम को जगाकर भारतीयता का परिचय दिया गया है।

Dr. Randhir Singh is working as Head of the Post Graduate Department of Hindi at Dyal Singh College, Karnal, Haryana (India) affiliated to Kurukshetra University, Kurukshetra. His specialization is in the fields of Medieval Sant Sahitya and Modern Literature. He was awarded Ph.D. from Kurukshetra University on the topic 'Sant Garibdas Ki Vani Mein Darshan Aur Rahasyavad'. His two books published mainly focus on the issues related to human values, religion, culture and Sant Sahitya. He has also presented about 40 Research Papers in various National and International Seminar/Workshops. He has guided 08 scholars for Ph.D. and 25 candidates have worked under his supervision for M.Phil. His rich experience of Research Guidance is a reflection of his teaching potential, writing skills and scholarship. 30 Research Papers published in various National and International Research Journals and Magazines go to his credit. He emphasizes on uplifting the status of Hindi Language and maintaining and promoting Indian Culture. This strengthens the fact of his unbinding inclination towards Hindi Language and proves his National Identity.

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी–भाषा का भविष्य

Future of Hindi Language in the age of Globalization

शोध–पत्र का सारांश (Abstract)

वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण की प्रक्रिया 19वीं शताब्दी से आरम्भ होकर पिछले बीस–पच्चीस सालों में सूचना व संचार क्रांति की आँधी से कम्प्यूटर और इंटरनेट के कारण पूरे विश्व में बाजारवाद के कारण वर्तमान युग में चरम पर पहुँच गई है। जिसमें भाषाई परिदृश्य ही बदल गया है। हमारी रोज की जिंदगी से लेकर बड़े कॉरपोरेट निर्णय तक वैश्वीकरण से प्रभावित हैं। वैश्वीकरण–भूमंडलीकरण का अंग्रेजी में ग्लोबलाइजेशन के नाम से आजकल चारों तरफ डंका बज रहा है। ग्लोबलाइजेशन का सीधा अर्थ मुक्त व्यापार और मुक्त संचार समझा जाता है। इस प्रक्रिया के दो मोटे पहलू हैं–आपसदारी और बाजारीकरण–इनमें भी बाजारीकरण पर जोर ज्यादा है। आपसदारी का तो केवल शोर ही सुनाई पड़ता है। अर्थात् आपसी मेलजोल की दुहाई देकर अपने देश के उत्पादों, मालों को दूसरे देशों में बेचना/खपाना। इसमें आकर्षक विज्ञापनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सब उत्पादक कम्पनियों का बस एक ही ध्येय है–मुनाफा और इस मुनाफा कमाने में इंटरनेट का महाजाल दरअसल उस मायाजाल की भूमिका अदा कर रहा है जो दुनिया को जानने से ज्यादा दुनिया को बाजार बना देने के लिए कम्पनियों के आगे तरह–तरह की सूचनाएँ परोसता है। इंटरनेट पर अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व से दुनिया भर के भाषा विद् और समाज–वैज्ञानिक चिंतित हैं–उनका अनुमान है कि वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में सूचना क्रांति के इस आक्रमण में दुनिया भर की भाषाएँ धीरे–धीरे मर रही हैं या एकदम अपना रूप खोती चली जा रही हैं। हजारों भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। तब ऐसे में हिन्दी का क्या भविष्य होगा? यह हमारे लिए चिंता भी है और चुनौती भी–क्योंकि हिन्दी भाषा सम्प्रेषण के साथ–साथ हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं जातीय अस्मिता की विशिष्ट पहचान लिए हुए है। हिन्दी भाषा ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए धर्म, जाति, क्षेत्र जैसी बाधाओं को लांघकर ग्रामीण परिवेश से लेकर विश्व के प्रतिष्ठित क्षेत्रों और मंचों पर सम्मानजनक उपस्थित दर्ज कराई है। इसके व्यापक एवं सर्वसंवादी होने का सबसे बड़ा प्रमाण डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट में सामने आया है जिसमें उन्होंने आंकड़ों के आधार पर हिन्दी को विश्व की प्रथम स्थान पर सर्वाधिक बोली/समझी जाने वाली भाषा सिद्ध करते हुए चीनी (मंदारिन) को दूसरे और अंग्रेजी को तीसरे स्थान पर दिखाया है।

वैश्वीकरण के युग में अब हमारे जीवन की आवश्यकताओं का निर्णय हम नहीं करते बल्कि कम्पनियाँ करती हैं–हम क्या खाएँ–क्या पीएँ–क्या ओढ़ें–क्या पहनें–क्या बिछाएँ–इन सबकी जिम्मेवारी अब कम्पनियों ने उठा ली है और यह सब हमारी भाषा के बल पर हो रहा है। अंग्रेजी चैनल और विदेशी चैनलों पर बढ़ते हिन्दी कार्यक्रम भी हिन्दी भाषा की व्यापारिक एवं वाणिज्यिक ताकत को बयान करते हैं। कम्पनियों ने और बाजार के नियंताओं ने हिन्दी भाषा की इस अमोघ ताकत को समझ लिया है। परिणामस्वरूप वे अपने प्रबंधकों को हिन्दी भाषा सिखाने पर जोर दे रहे हैं। इसलिए हमें बदलते समय की अपेक्षाओं के अनुरूप हिन्दी भाषा का परिवर्द्धन और संवर्द्धन करते हुए इंटरनेट के माध्यम से रोजगार की सम्भावनाओं की तलाश करते हुए आगे बढ़ना होगा–तभी हम विश्व–पटल पर हिन्दी–भाषा के और अधिक उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित कर पाएंगे।